मेरा प्रिय खेल (2)

कबड्डी खेलने के स्थान के बीचोंबीच एक रेखा की डाल देते हैं। जितने भी खिलाड़ी हों उन्हें दो भागों में बाँट लेते हैं। दोनों टीमें अपने-अपने पाले में चली जाती हैं। दोनों टीमों के खिलाड़ी संख्या में बराबर होने चाहिए। खेल आरम्भ होने पर एक खिलाड़ी 'कबडी-कबड्डी' बोलता हुआ दूसरी टीम के पाले में जाता है। उस खिलाड़ी का यह प्रयास होता है कि एक क्षण के लिए भी उसके मुँह से कबड्डी शब्द निकलना बन्द न हो। दूसरे शब्दों में उसकी साँस नहीं टूटनी चाहिए। वह दूसरी ओर के खिलाड़ी को छूकर अपने पाले में पहुँचे। दूसरी ओर के सभी खिलाड़ी उसे घेरकर पकड़ने का प्रयास करते हैं। यदि दूसरी टीम के खिलाड़ी उसे पकड़ लें और पाले की रेखा को न छूने दें तो वह आउट हो जाता है। यदि वे एक या एक से अधिक खिलाड़ियों को छूकर अपने पाले में लौट जाता है तो वे सभी खिलाड़ी आउट माने जाते हैं। इस प्रकार जिस टीम के जितने अधिक खिलाड़ी आउट होते हैं, वहीं हार जाती है।

इस खेल में शारीरिक क्षमता, चुस्ती-फुर्ती का बड़ा महत्त्व होता है। इसमें चोट लगने का भी खतरा रहता है। अत: इसे सावधानी से खेलना चाहिए। यह एक राष्ट्रीय खेल भी है। अब तो यह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खेला जाने लगा है।